CHAPTER 2, दोपहर का भोजन

PAGE 33, अभ्यास

11:2:1: प्रश्न-अभ्यास:1

1. सिद्धेश्वरी ने अपने बड़े बेटे रामचंद्र से मँझले बेटे मोहन के बारे में झूठ क्यों बोला?

उत्तर- सिद्धेश्वरी ने अपने बड़े बेटे रामचंद्र से मोहन के विषय में झूठ इसलिए बोला क्यूंकि वह एक माँ है ।परिवार को एक सूत्र में बाँध कर रखना चाहती है ।उसके जीवन में गरीबी की जबरदस्त मार है । रामचन्द्र सुबह से शाम तक छोटी मोती नौकरी के लिए मारा -मारा फिरता है । मोहन यार दोस्तों के साथ मगन रहता है । मोहन पढने के स्थान पर समय नष्ट कर रहा था ।अतः यह झूठ बोलकर वह घर में शान्ति बनाएँ रखना चाहती थी ।

11:2:1: प्रश्न-अभ्यास:2

2. कहानी के सबसे जीवंत पात्र के चरित्र की दृढ़ता का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

उत्तर- यधपि देखा जाये तो हम इस कहानी में सबसे जीवंत पात्र सिद्धेश्वरी को कहेंगे है ।वह सब कुछ जानते हुए भी स्थिति को संभाले रखती है । यहाँ तक की घर के किसी भी सदस्य को पता नहीं चलने देती कि घर में खाने के लिए भोजन नहीं है । उसे इस बात का अहसास है की परिवार के सदस्य सच्चाई से वाकिफ है लेकिन फिर भी उनसे झूठ बोल कर वह उनके अन्दर के विश्वास को कायम रखती है । वह अपने परिवारजनों के बिच भी प्रेमभाव को बनाये रखने के लिए हमेशा प्रयासरत रही है । वह जानती है सब के सब परिवारिक हालातों से टूटे हुए हैं लेकिन वह सभी को अपने झूठ के सहारे हमेशा भरोसा दिलाती है

11:2:1: प्रश्न-अभ्यास:3

3. कहानी के उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए जिनसे गरीबी की विवशता झाँक रही हो।

उत्तर- गरीबी की विवशता झाँकने वाली निम्नलिखित परिस्थितियां :

(क) जब सिद्धेशवरी रामचंद्र को दो रोटी देती है और बार -बार पूछती है कि “एक और रोटी दूँ क्या ? एक और ले ले;'' ‘ बेटा बोलता है नहीं ।

(ख) मोहन आवारागर्दी करता है लेकिन उसे पता है कि दो रोटी से अधिक नहीं है । लेकिन माँ उसे भी पूछती है और ले ले !वो भी नहीं कह देता है ।

(ग) सिद्धेश्वरी के पति उन्हें भी दो रोटी के अतिरिक्त बार-बार आग्रह करती है और लो और मना करने पर भी अपने हिस्से की आधी रोटी दे देती है । उनके पति कहते हैं ,कुछ मीठा खाए हुए बहुत दिन हो गए । अगर गुड

है तो एक लोटा शरबत बना के ले आओ न । सिद्धेश्वरी लाके दे देती है । उसे बड़े प्रेम से पीकर पेट भर लेते है ।

(घ) चारपाई पर बीमार बच्चा बार-बार माँ की ओर देख रहा था कि कुछ खाना मिले । उसके लिए माँ एक रोटी लेकर आती है और खायेगा ये ले । यह कहकर पूरी रोटी ख़त्म हो जाती है । सिद्धेश्वरी एक लोटा पानी पीकर रह जाती है ।

11:2:1: प्रश्न-अभ्यास:4

4. 'सिद्धेश्वरी का एक दूसरे सदस्य के विषय में झूठ बोलना परिवार को जोड़ने का अनथक प्रयास था' - इस संबंध में आप अपने विचार लिखिए।

उत्तर- कोई भी गृहणी अपने पति और पुत्र को और गृहस्थी की कमज़ोर गाडी को खींचने में चाहे झूठ

बोलना पड़े या सच कहीं हिचकती नहीं है । उसके झूठ बोलने से कभी रामचंद्र के चेहरे पर ख़ुशी की लहर आ जाती है । कभी मोहन के चेहरे पर तो कभी पिता के चेहरे पर ये अपनी ओर से ही एक दुसरे की तारीफें उनलोगों के सामने किया करती थी । ताकि कितना भी दुःख हो रोटियों के लाले पड़े हों लेकिन प्रेम की मुस्कान किसी के चेहरे पर आये तो सही । सिद्धेश्वरी के झूठ बोलेने का यही एक मात्र उद्देश्य था ।

11:2:1: प्रश्न-अभ्यास:5

5. 'अमरकांत आम बोलचाल की ऐसी भाषा का प्रयोग करते हैं जिससे कहानी की संवेदना पूरी तरह उभरकर आ जाती है।' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इस कहानी के अन्तरगत अमरकांत ने जिस भाषा का प्रयोग किया है वह भाषा आमतौर

बोलचाल की भाषा है । इसमें किसी भी प्रकार का बनावटीपन नहीं है । वे बड़े सहज रूप में हर बात इस कहानी में लिखते है

जैसे कि ; सिद्धेश्वरी ने पूछा ,'बड़का की कसम ,एक रोटी देती हूँ । अभी बहुत सी हैं ।'

इस बात पर मुंशी जी अपराधी के समान अपनी पत्नी को देखते है तथा रसोई की ओर कनखी से देखने के बाद किसी घुटे उस्ताद की भाँती बोले ,'रोटी रहने दो ,पेट काफी भर चूका है ।अन्न और नमकीन चीज़ों खाते - खाते तबियत भी उब गयी है । तुमने व्यर्थ में कसम धरा दी । खैर रखने के लिए ले रहा हूँ । गुड होगा क्या ?

इसमें लेखक ने 'कनखी' ,'घुनटे उस्ताद,' बड़के धरा दी' जैसे कई शब्दों का प्रयोग कर भाषा में जान डाल दी है

11:2:1: प्रश्न-अभ्यास:6

6. रामचंद्र मोहन और मुंशी जी खाते समय रोटी न लेने के लिए बहाने करते हैं, उसमें कैसी विवशता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- सब जानते हैं कि घर में पेटभर भोजन करने के लिए अन्न नहीं है । सिद्धेश्वरी रोटी देने पर जोर डालकर उन्हें यही साबित करना चाहती है कि अन्न भरा पड़ा है ।किसी को चिंता करने की आवश्यकता नहीं है । रामचन्द्र तथा मुंशी जी स्थिति से वाकिफ हैं । वे रोटी न लेने के लिए बहाने बनाकर सिद्धेश्वरी को धोखा देने का प्रयास करते हैं कि उन्हें भूख नहीं है । यह उनकी विवशता है की वह आधे पेट होने पर भी पेट भरे होने की बात कह रहे हैं । यह उनकी गरीबी है जो उनसे झूठ बुलवा रही है ।

11:2:1: प्रश्न-अभ्यास:7

7. मुंशी जी तथा सिद्धेश्वरी की असंबद्ध बातें कहानी से कैसे संबंद्ध है? लिखिए।

उत्तर- इस कहानी में मुंशी जी और सिद्धेश्वरी के बीच जो भी बातें होती हैं, वे एक-दूसरे से सम्बंधित प्रतीत नहीं होती हैं। जब मुंशी जी सिद्धेश्वरी से किसी अन्य विषय पर बात कर रहे होते तो सिद्धेश्वरी अचानक मुंशी जी से कभी बारिश के बारे में, कभी फूफा जी के बारे में, कभी गंगाशरण बाबू की लड़की के बारे में बातें बदल कर गंभीर माहौल को हल्का करने की कोशिश करती है। वह जानती है कि मुंशी जी के पास उसके किसी भी सवाल का कोई जवाब नहीं है। अगर उनके पास जवाब होता, तो वो उससे पहले ही जवाब दे देते । वह मुंशी की स्थिति को भलीभांति समझती है। वह जानती है की मुंशी जी के पास कोई नौकरी नहीं है। वह हर दिन नौकरी खोज रहा है लेकिन अभी तक कोई सफलता नहीं मिली है। घर में कुछ भी खाने के लिए नहीं बचा है ।

लेकिन मुंशी कुछ नहीं कर पा रहे है। इसलिए हमेशा मुंशी जी घर के हालात पर बात करने से परहेज करते हैं। इसलिए, वे किसी भी विषय में कम चर्चा करने कोशिश करते हैं। उनके बीच की स्थिति को सामान्य करने के लिए, सिद्धेश्वरी असंबद्ध वार्ता करती है, जो कहानी के संबंध को बनाए रखने में मदद करती है।

8. 'दोपहर का भोजन' शीर्षक किन दृष्टियों से पूर्णतया सार्थक है?

उत्तर- दोपहर का भोजन गरीबी का एक मनोवैज्ञानिक उद्धरण कहानी के रूप में प्रस्तुत किया गया है ।इस कहानी में जो भी नायिका होती वो ऐसा ही करती जैसा सिद्धेश्वरी ने किया ।

11:2:1: प्रश्न-अभ्यास:8

9. रसोई संभालना बहुत जिम्मेदारी का काम है - सिद्ध कीजिये।

उत्तर- रसोई में जितनी भी सामग्री हो गृहणी को उतने में ही सभी सदस्यों को ध्यान में रखकर पूरी स्थिति का समावेश किया जाता है । अगर पर्याप्त सामग्री हो तब चिंता की बात बिलकुल भी नहीं होती । लेकिन सामग्री बहुत कम हो और सदस्यों को पूरे न पड़ें तो गृहणी की परीक्षा हो जाती है ।ऐसे में कुशल गृहणियां अपनी ज़िम्मेदारी की परीक्षा बड़े लगन और मेहनत से देती है । अपनी जान की परवाह नहीं करती ।

11:2:1: प्रश्न-अभ्यास:9

10. आपके अनुसार सिद्धेश्वरी के झूठ सौ सत्यों से भारी कैसे हैं? अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

उत्तर- सिद्धेश्वरी ने जो भी झूठ बोले वह अपने परिवार के मध्य एकता ,प्रेम और शान्ति स्थापित करने के लिए बोले थे । उसके झूठों में किसी प्रकार का स्वार्थ विद्यमान नहीं था । उसके झूठ एक भाई का दुसरे भाई के प्रति बच्चों का पिता के प्रति तथा पिता की बच्चों के प्रति आपसी समझ और प्रेम बढाने के लिए बोले गए थे । इस तरह वह परिवार को मुसीबत के समय एक बनाये रखने का प्रयास करती है । अतः उसके झूठ सौ सत्यों से भारी थे । झूठ वह कहलाता है जिससे किसी का नुकसान हो ।इन झूठों से किसी का नुकसान नहीं था । परिवार को जोड़े रखने का यह माध्यम था । ये झूठ अच्छी भावना लेकर बोले गए थे । अतः ये सौ सत्य से बहुत अच्छे हैं ।